आय के मुलाकात करी, लगे श्री देवचन्द्र जी के कदम ।
तब पूछा ए कौन है, कहूया श्री मेहेराज की आतम ॥१॥

श्री मेहेराज ठाकुर जी ने जब श्री देवचन्द्र जी के चरणों में आकर प्रणाम किया तो उन्होंने अस्वस्थ हालत में ही पूछा कि कौन प्रणाम कर रहा है । उन्होंने उत्तर दिया कि मेहराज ठाकुर की आतम आपके चरणों में प्रणाम करती है ।

नाम सुनत मेहेराज को, बड़ो जो पायो सुख ।
पूछा मेहेराज आये तुम, बात करने लगे मुख ॥२॥

श्री मेहेराज ठाकुर का नाम सुनते ही श्री देवचन्द्र जी बड़े प्रसन्न हो गये तथा उठकर बैठ गये । मिलाप करके पूछा कि हे मेहराज ठाकुर ! आप आ गये । यह बहुत अच्छा हुआ और तब वे बातें करने लगे ।

दई दिलासा नरमी से, मुखतें कहे सुकन ।
मैं बहुत बेर याद किया, तुम तरफ पठाये मोमिन ॥३॥

बड़े प्यार से दिलासा देते हुए उन्होंने कहा कि हे मेहराज ठाकुर ! हमारे दिल में किसी तरह की कोई बात ही नहीं थी । आप व्यर्थ ही में दुःखी होकर चले गये थे । मैं तो आपको बार-बार याद कर रहा था और इसलिए आपको बुलाने के लिए बिहारी जी को आपके पास भेजा ।

तब जवाब श्री मेहेराज ने, दिया श्री देवचन्द्र कों ।
था काम लौकिक का, डाला गले और के मों ॥४॥

तब श्री मेहराज ठाकुर ने श्री देवचन्द्र जी को उत्तर दिया कि दीवानगिरी का बहुत बड़ी जिम्मेदारी वाला काम था जो और किसी को जबरन सौंप कर आया हूं ।

मोकों बुलावने का, किने न कहूया वचन ।
जब मैं सुना सुकन, तब देखे कदम रोसन ॥५॥

आप जो बुलाने के विषय में कह रहे हैं ऐसा मुझसे किसी ने भी नहीं कहा कि आप मुझे बुला रहे हैं । आज बालवाई ने आपके बुलाने का संदेशा जैसे ही मुझे दिया मैंने माया का कार्य छोड़ दिया और आपके चरणों में आ गया ।

अब तो फेर न जाओगे, लौकिक काम ऊपर ।
के फेर जाय के आओगे, काम इस्लाम पर ॥६॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने पूछा कि अब दोबारा तो फिर उस काम के लिए जाना नहीं पड़ेगा या जाकर फिर आकर के धर्म का कार्य करोगे ?

Nijanand App

मैं तुम को इस वास्ते, फेर फेर किया याद ।
जो इन्द्रावती ठाड़ी रोवती, देखी ऊपर बुनियाद ॥७॥

मेरे द्वारा बार-बार आपको बुलाने की हकीकत यह थी कि इस तन को छोड़ने के बाद युगल स्वरूप आपके ही दिल को धाम बना कर बैठने वाले हैं लेकिन आपके अन्दर बैठी श्री इन्द्रावती जी की आतम ९ साल की जुदायगी से जो रूदन कर रही थी तो उसके दुःख को मिटाये बिना कैसे श्री राज जी तुम्हारे अन्दर आ कर विराजमान हो सकते थे और बुलाकर मिले बिना वह दुःख दूर नहीं हो सकता था ।

मैं पैठ न सकों धाम में , तहां इनको रोवती देख ।
तिस वास्ते मैं तुमको, बुलाया कर विसेख ॥८॥

तब श्री राज जी महाराज ने कहा कि श्री इन्द्रावती को दुःखी देख कर मैं उसके दिल को धाम नहीं बना सकता था । इसलिये खास कर मैंने तुमको बुलाया है ।

अब तो भला भया, तुम आये जो इत ।
मोकों अति सुख उपजा, अब मैं हुकम करत ॥९॥

तब श्री देवचन्द्र जी महाराज ने कहा कि यह बहुत अच्छा हुआ जो आप यहां आ गये हैं । आपके आने से मुझे बहुत खुशी हुई है । इसलिये अब मैं हुकम करता हूं कि आप और बिहारी जी इकट्ठे प्रसाद ले लो ताकि बिहारी जी के मन की मलीनता दूर हो जाय ।

फेर थाल प्रसाद सों भराय के, धराया आगे आन ।
तब श्री जी ने किया, बिहारी जी का सम्मान ॥१०॥

धनी श्री देवचन्द्र जी की आज्ञा के अनुसार सुन्दर साथ ने थाल परोसकर आगे आ कर रखा । तब श्री जी ने बिहारी जी का सम्मान करते हुए आरोगने को कहा ।

आओ बिहारी जी तुम, बैठो मुझ भेले ।
एक ठौर प्रसाद लीजिये, बैठ के एकठे ॥११॥

हे बिहारी जी महाराज ! कृपया पधारिये । हम दोनों मिलकर इकट्ठे एक ही थाल में भोजन ग्रहण करें ।

तब बिहारी जी ने कह्या, मैं न बैठों संग तुम ।
श्री जी ने फेर कह्या, अरज तलबी हुकम ॥१२॥

तब बिहारी जी ने उत्तर दिया कि मैं तुम्हारे संग कभी भी भोजन नहीं करूंगा । तब फिर श्री मेहराज ठाकुर जी ने बिहारी जी को मिलकर भोजन करने का हुकम करने के लिए श्री देवचन्द्र जी से चाहनापूर्वक कहा ।

Nijanand App

तब श्री देवचन्द्र जी ए कहूया, आप श्री मुख सुकन ।
क्या रद बदल होत है, आपस में सैंयन ॥१३॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने अपने मुख से कहा कि तुम दोनों एक परमधाम की आत्मा हो कर आपस में क्या रदबदल कर रहे हो ?

तब श्री जी ए कहूया, बिहारी जी और हम ।
एक ठौर प्रसाद लेवें, ऐसा करो हुकम ॥१४॥

तब श्री जी ने कहा कि हे सद्गुरू महाराज ! आप बिहारी जी को हुकम कीजिए कि वे मेरे साथ मिल कर भोजन ग्रहण करें ।

तब श्री देवचन्द्र जी ए कहा, क्यों न भेले बैठो तुम ।
जो श्री मेहेराज बुलावहीं, क्यों न होय एक आतम ॥१५॥

तब श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि हे बिहारी जी ! जब मेहराज ठाकुर तुम्हें सम्मानपूर्वक बुला रहे हैं तो अपने मन की मलीनता को दूर करके एक रस हो कर इकट्ठे भोजन क्यों नहीं कर लेते हो ?

तब बिहारी जी आय बैठे, श्री जी के भेले ।
प्रसाद लिया एकठे, बातें करने लगे ॥१६॥

तब बिहारी जी श्री जी के साथ आकर बैठे और मिलकर भोजन करने लगे एवं आपस में बातें करने लगे ।

श्री देवचन्द्र जी धनी सों, बातें करीं श्री जी साहिब ।
अपनी जो बीतक, बतावत गये तब ॥१७॥

भोजन करते समय अच्छा अवसर देखकर श्री जी साहिब स्वयं धनी श्री देवचन्द्र जी से बातें करने लगे और अरब की पूरी हकीकत कह सुनायी । जिसमें उन्होंने जितना धन दिया तथा क्या-क्या कष्ट उठाये और कैसे बाकी का धन राजा ने ले लिया, कैसे कलाजी के पास गये तथा कैसे वहां से वापस आये, उसका सारा वृत्तान्त कह सुनाया ।

सुनके उत्तर दिया, भला किया अब तुम ।
काम माया का छोड़के, आये तले हुकम ॥१८॥

सब सुनकर धनी श्री देवचन्द्र जी ने कहा कि आपने यह बहुत अच्छा किया कि माया का काम छोड़कर मेरी आज्ञा के अनुसार श्री राजजी की सेवा में आ गए हो ।

Nijanand App

इन समें इहां दिन बाइस, रहे साथ मिने ।
फेर नजर करी धाम को, साथ छोड़े इन समें ॥१९॥

अब यहां श्री देवचन्द्र जी २२ दिनों तक सुन्दरसाथ के बीच में रहे तथा इसी बीच मे भविष्य में श्री मेहेराज ठाकुर के तन से होने वाली लीला को उन्हें बता दिया। २२ दिनों के बाद वे शरीर छोड़कर सुन्दरसाथ के बीच से अदृश्य हो गए।

साथ को इन समें, कछु नहीं पहिचान ।
धाम नाता किने ना देखा, अपने ठौर इहां ईमान ॥२०॥

उस समय परमधाम की वाणी के न होने से श्री देवचन्द्र जी के अन्दर बैठे हुए अक्षरातीत युगल स्वरूप की पहचान किसी को नहीं हो सकी जिससे किसी ने भी परमधाम के नाते को नहीं पहचाना कि हमारे धनी हमसे कभी भी जुदा नहीं हो सकते हैं इसलिए श्री देवचन्द्र जी के तन के ओझल होते ही सबका ईमान खत्म हो गया।

ए आज्ञा यों ही हती, करी हक सुभान ।
लिखा लोहमौफूज में, भई तेती त्यों पहिचान ॥२१॥

श्री राजजी महाराज के हुक्म से ऐसा ही होना था। सतगुरू श्री धनी देवचन्द्र जी के द्वारा इतनी ही पहचान होनी निश्चित थी।

बात जो इसलाम की, रही न दिल में किन ।
आप अपने घरों, सब बैठ रहे मोमिन ॥२२॥

श्री निजानन्द सम्प्रदाय के प्रति या अक्षरातीत धाम धनी की पहचान के प्रति किसी के दिल में भी भाव नहीं रहे। सभी अपने घरों में चुपचाप बैठ गये।

केतेक दिन पीछे, बाल बाई इत आई ।
श्री मेहेराज के घरों आये, ये खबर ल्याई ॥२३॥

कुछ दिन पश्चात सब सुन्दर साथ ने मिल कर राधा वल्लभी मार्ग की परम्परा अनुसार बिहारी जी को गद्दी पर बिठाना निश्चित किया। इस बात की सूचना श्री मेहराज ठाकुर के घर आकर के बालबाई ने कही।

श्री मेहेराज सों मसलहत, करने बैठी जब ।
अब क्या करना है तुम्हें, रह्या काम धाम का सब ॥२४॥

बालबाई श्री मेहराज ठाकुर जी से यह पूछने लगी कि हम सब सुन्दर साथ ने यह निश्चित कर दिया है कि श्री धनी देवचन्द्र जी की गादी पर उनके सुपुत्र बिहारी जी को ही बिठाया जाये। इस विषय में आपका क्या विचार है क्योंकि किसी को गादी पर बिठाये बिना धर्म का कार्य नहीं हो सकता।

Nijanand App

मसनन्द श्री देवचन्द्र जी की, सोतो बड़ी बुजरक ।
सो खाली क्यों रहे, देखो हुकम सामने हक ॥२५॥

श्री देवचन्द्र जी की गादी तो इस संसार में सब से महान है । वह खाली कैसे रखी जाये । सब सुन्दर साथ के द्वारा निश्चित किए हुए कार्य को श्री राजजी का हुक्म मानना चाहिए ।

कोई उत आवत नहीं, भूल गए सगाई ।
काहू को निजधाम की, रही नहीं असनाई ॥२६॥

क्यों कि गादी पर किसी को न बिठाने से वहां कोई गांग जी भाई के घर आता नहीं है तथा सब सुन्दर साथ परमधाम को भूल गए हैं जैसे कि श्री राजजी से कोई सम्बन्ध ही न हो ।

किनको बिठावें इन पर, किन का करें अखत्यार ।
निसबत नसल से करें, बिहारी जी हैं सिरदार ॥२७॥

आप ही बताओ कि श्री बिहारी जी के बिना किसको गादी पर बिठायें तथा किस को इस महत्वपूर्ण गादी का अधिकार दें । राधा वल्लभी मार्ग की परम्परा के अनुसार बिहारी जी ही अपने पिता श्री की गादी के हकदार बनते हैं वैसे भी श्री देवचन्द्र के सुपुत्र होने के नाते से वे हम में सिरदार हैं ।

तब श्री मेहराज ने कह्या, ये ही बात है सिरे ।
सब साथ मिल के, ये ही काम करें ॥२८॥

तब श्री मेहराज ठाकुर जी ने उत्तर दिया कि आप सब सुन्दर साथ जी ने जो मिल कर गादी पर बिठाने का निर्णय लिया है उसके साथ मैं भी सहमत हूं । हम सब को मिलकर इस कार्य को करना चाहिए अर्थात् पहले करना चाहिए ।

यह बात बैठी दिल में, यह काम करना जरूर ।
साथ सों भली भाँत सों, मैं करों मजकूर ॥२९॥

यह बात मेहराज ठाकुर जी के दिल को भी अच्छी लगी तथा निश्चय कर लिया कि यह कार्य अवश्य करना चाहिए । यदि कोई सुन्दर साथ बिहारी जी को नहीं स्वीकार करेगा तो मैं उसे समझाऊंगा ।

पहिले श्री बिहारी जी को, मैं बैठाऊं इत ।
कदमों लाग सेजदा करूं, तब साथ भी आवे तित ॥३०॥

हे बालबाई जी ! तुम मेरे विषय में चिन्ता न करो, सबसे पहले मैं ही बिहारी जी को गादी पर बिठा कर उनके चरणों में प्रणाम करूंगा तो सब सुन्दर साथ भी उन्हें धाम धनी मानने लगेंगे ।

Nijanand App

एह मसलहत करके, आई बालबाई अपने घर ।
समय दिन देख के, पहुंचे उस काम ऊपर ॥३१॥

श्री मेहराज ठाकुर जी से इस प्रकार का पक्का निर्णय करके बालबाई ने बिहारी जी को बधाई दी। तब सब ने मिल कर शुभ दिन निश्चित करके बिहारी जी को गादी पर बिठाने का निश्चय कर लिया ।

आये के बिहारी जी को, बैठाये ऊपर मसनन्द ।
कदमों लाग के बैठे, फेर घर में भया आनन्द ॥३२॥

तब उस शुभ दिन को श्री मेहेराज ठाकुर ने बिहारी जी को गादी पर बैठाकर चरणों में प्रणाम किया। तब उनके पीछे-पीछे सब सुन्दर साथ ने चरणों में प्रणाम किया और खूब उत्सव मनाया ।

महामति कहें ये सैंयनों, ए बीतक पुरी नवतन ।
अब आगे की कहों, याद करो मोमिन ॥३३॥

आप धाम के दूल्हा श्री प्राणनाथ जी फरमाते हैं कि इस प्रकार से बिहारी जी को गादी पर बैठाया गया । इसके पश्चात् जो घटनायें घटनी हैं उसे आप सब सुन्दर साथ याद करना ।

(प्रकरण १६, चौपाई ७२४)

सम्बत सत्रह सौ बारोत्तरे, आसो महिने में ।
सब साथ को खबर, पहुंची श्री मेहेराज से ॥१॥

सम्वत् १७१२ के आसो (क्वार) के महीने में बिहारी जी को गादी पर बैठाने का समाचार सब सुन्दरसाथ को श्री मेहराज ठाकुर के द्वारा भेजा गया ।

सबसों चरचा करके, चित को दिया मरोर ।
तुम आय सब सेजदा करो, कर खण्डनी कहूया जोर ॥२॥

जिस सुन्दर साथ को बिहारी जी महाराज का गादी पर बैठना उचित नहीं लगा, उनको स्वयं श्री मेहराज ठाकुर खण्डनी करके समझाते थे, कि तुम उनको धाम का धनी मानो ।

सब साथ ता दिन से, आए हुकम तले निजधाम ।
चरचा प्रात संझा को, करने लगे इस ठाम ॥३॥

इस प्रकार से सब सुन्दरसाथ उस दिन से बिहारी जी को ही धाम का धनी मान कर उनकी आज्ञा के अनुसार चलने लगे तथा प्रातः और संध्या समय बिहारी जी की चर्चा सुनने के लिये आने लगे ।

Nijanand App